तत्त्वार्थसूत्र
छठा अध्याय

PRESENTATION CREATED BY:
श्रीमति सारिका जैन

मंगलाचरण

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम्।

ज्ञातारं विश्वतत्त्वाना वन्दे तद्गुणलब्धये।।

ग्रंथ प्रारंभ करने के पूर्व जानने योग्य ६ बातें:

ग्रंथ का नाम	• तत्त्वार्थसूत्र
ग्रंथ के रचयिता	• आचार्य उमास्वामी
मंगलाचरण में किसे नमस्कार किया गया है:	• अरहंत देव को
ग्रंथ का प्रमाण	• १० अध्याय, ३५७ सूत्र
निमित्त	• भव्य जीवों के निमित्त
हेतु	• मोक्ष प्राप्ति हेतु

तत्त्वार्थसूत्र अर्थात् ७ तत्त्व

१ - ४ अध्याय	• जीव तत्त्व
५ वाँ अध्याय	• अजीव तत्त्व
६ - ७ अध्याय	• आस्रव तत्त्व
८ वाँ अध्याय	• बंध तत्त्व
९ वाँ अध्याय	• संवर व निर्जरा तत्त्व
१० वाँ अध्याय	• मोक्ष तत्त्व

Presentation Created By- श्रीमति सारिका विकास छाबड़ा

इसे समझना क्यों आवश्यक है?

क्योंकि ७ तत्त्वों के सही श्रद्धान से ही **सम्यग्दर्शन** होता है

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम्॥

इन ७ तत्त्वों के सत्य
श्रद्धान से हम ग्यारंटी से
सुखी होंगे
और उनके सत्य श्रद्धान
बिना हम ग्यारंटी से
दुखी ही रहेंगें

७ तत्त्वों का सामान्य स्वरूप ?

जीव अजीव

आस्रव बंध संवर निर्जरा मोक्ष

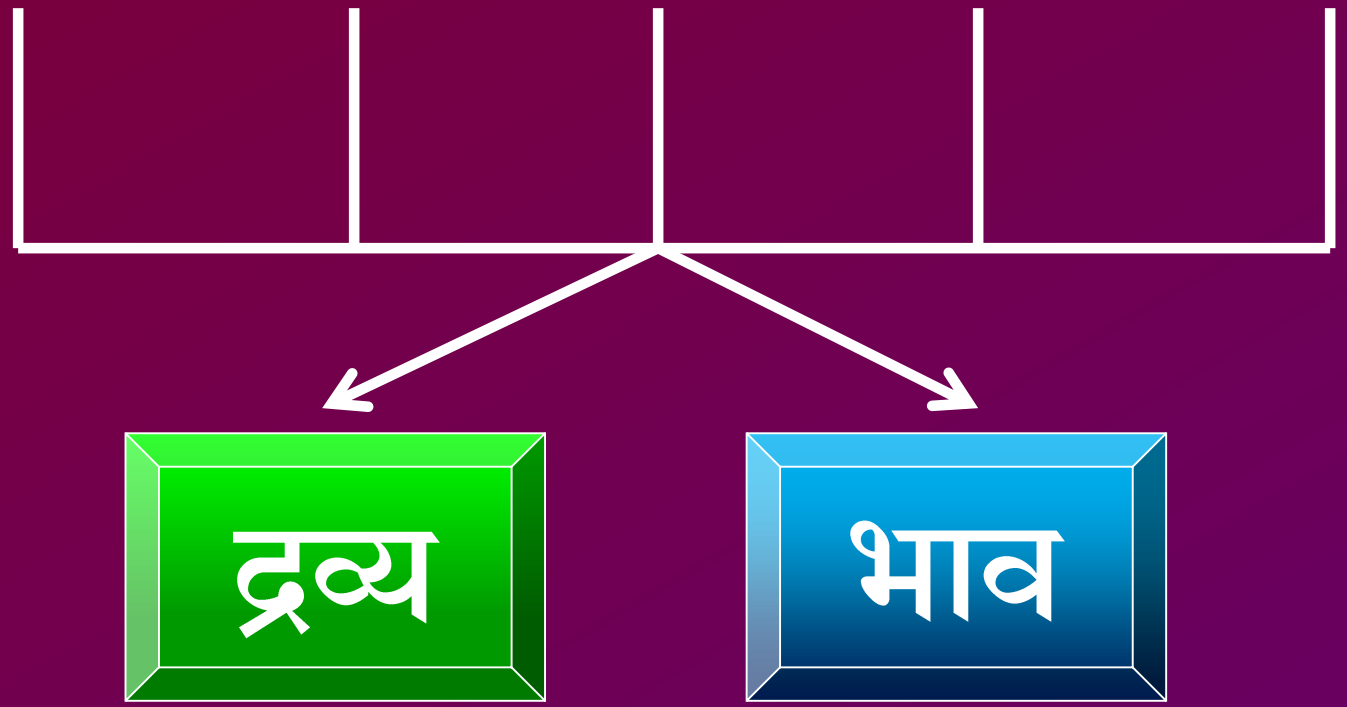

द्रव्य तत्त्व

कर्मों
- का आना - आस्रव
- का आत्मा से संबंध होना - बन्ध
- का आना रुकना - संवर
- का एकदेश खिरना - निर्जरा
- का सम्पूर्ण नाश - मोक्ष

Presentation Created By- श्रीमति सारिका विकास छाबड़ा

भाव तत्त्व

- शुभ-अशुभ भावों
  - की उत्पत्ति - आस्रव
  - का बने रहना - बन्ध
- शुद्ध भावों की
  - उत्पत्ति - संवर
  - वृद्धी - निर्जरा
  - पूर्णता - मोक्ष

Presentation Created By- श्रीमति सारिका विकास छाबड़ा

द्रव्य हैं, गुण हैं कि पर्यायें हैं?

- जीव अजीव तत्त्व - द्रव्य हैं
- भाव आस्त्रव, बंध, संवर, निर्जरा, मोक्ष ये जीव द्रव्य की पर्यायें हैं
- द्रव्य आस्त्रव, बंध, संवर, निर्जरा, मोक्ष ये अजीव द्रव्य की पर्यायें हैं

❁कायवाङ्मनःकर्मयोगः॥१॥

❁काय, वचन और मन की क्रिया योग है।

❁स आस्रवः॥२॥

❁वह आस्रव है ॥२॥

योग

भाव योग

कर्म-नोकर्म को ग्रहण करने की जीव की शक्ति

द्रव्य योग

आत्म प्रदेशों में परिस्पन्दन

उसमें निमित्त मन, वचन काय की चेष्टा

योग

शरीर, वचन और मन की क्रिया करने के लिये उस क्रिया के अभिमुख

जो आत्मप्रदेशों का परिस्पन्दन हैं वह योग है

काय योग

- काय की क्रिया के लिये जो प्रयत्न होता है उसे काय योग कहते हैं

वचन योग

- भाषा वर्गणा संबंधी पुद्गल स्कन्धों का अवलंबन करके जो जीव प्रदेशों का संकोच विस्तार होता है वह वचन योग है

मन योग

- बाह्य पदार्थों के चिंतन में प्रवृत्त हुए मन से उत्पन्न जीव प्रदेशों के परिस्पंद को मनोयोग कहते हैं

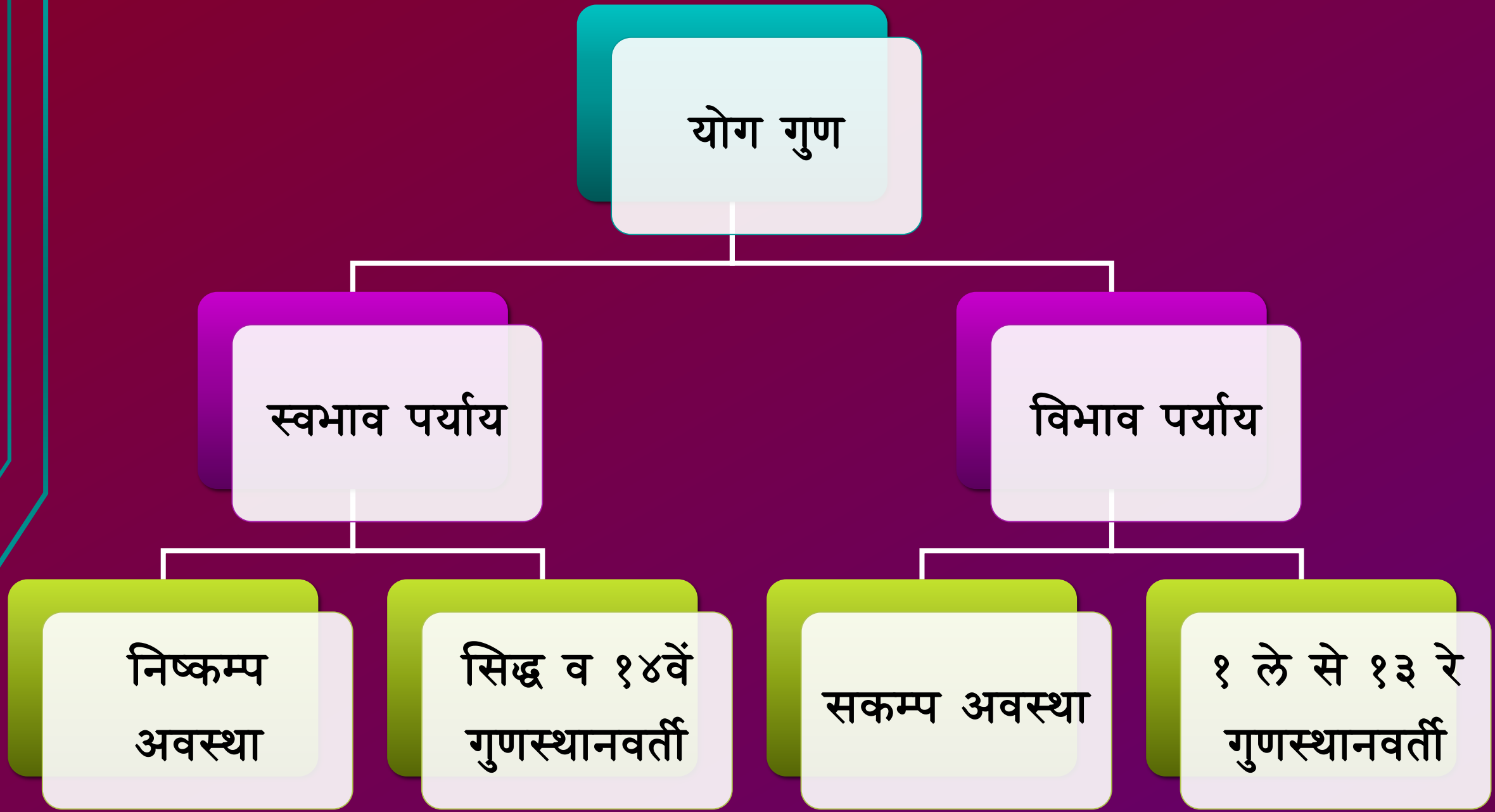

योग गुण

- स्वभाव पर्याय
  - निष्कम्प अवस्था
  - सिद्ध व १४वें गुणस्थानवर्ती
- विभाव पर्याय
  - सकम्प अवस्था
  - १ ले से १३ रे गुणस्थानवर्ती

योग(आत्मप्रदेशों का परिस्पंदन) ही

आस्रव है

Designed by Pngtree

आस्रव

द्रव्य आस्रव

पौद्गलिक कर्मों का आना

भाव आस्रव

आत्मा के मोह, राग, द्वेषरूप विकारी भाव

कारण(निमित्त)	कार्य
द्रव्य योग	कर्मों का आना
जैसे- नाव में जल आने का छिद्र	जैसे - जल का आना

कर्मों का आना

उपादान	निमित्त	कार्य	फल
भाव योग	मन, वचन, काय की चेष्टा	द्रव्य योग	द्रव्यास्रव कर्मों का आना

निमित्त अपेक्षा योग के भेद

मन	वचन	काय	कुल १५
योग=४	योग= ४	योग =७	

योग को ही आस्रव का कारण क्यों कहा? मिथ्यात्वादी को आस्रव का कारण क्यों नहीं कहा?

योग 1 से 13 गुणस्थान तक पाया जाता है जबकि मिथ्यात्वादी सभी में नहीं पाए जाते

मिथ्यात्वादि आस्रव के कारण कैसे नहीं?

मिथ्यात्व	• १ गुणस्थान तक ही पाया जाता है, उसके आगे मिथ्यात्व बिना आस्रव कैसे घटित होगा ?
अविरति	• ४थे गुणस्थान तक ही पाई जाती है
प्रमाद	• ६वें गुणस्थान तक ही पाई जाती है
कषाय	• १० वे गुणस्थान तक ही पाई जाती है
योग	• १ले से १३वे गुणस्थान तक सभी जीवों के पाया जाता है

Presentation Created By- श्रीमति सारिका विकास छाबड़ा

शुभः पुण्यस्याशुभः पापस्य॥३॥

❁शुभयोग पुण्य का और अशुभयोग पाप का आस्त्रव है॥३॥

योग के निमित्त से आस्रव में भेद

पुण्यास्रव	पापास्रव
कारण	कारण
शुभयोग (शुभ परिणामों के निमित्त से)	अशुभयोग (अशुभ परिणामों के निमित्त से)

शुभयोग- सम्यगदर्शनादि से अनुरंजित योग विशुद्धि का अंग होने से शुभ योग है

काय	वचन	मन
• जैसे- प्राणी रक्षा	• जैसे- सत्य कथन	• जैसे- दूसरे का भला सोचना
• -पूजा	• -उपदेश	• -पंच परमेष्ठी का चिंतन
• -स्वाध्याय	• -स्तुति	

अशुभयोग- मिथ्यादर्शानादी से अनुरंजित योग संक्लेश का अंग होने से अशुभ योग है

काय	वचन	मन
• जैसे- प्राणी हिंसा • -चोरी • -मैथुन	• जैसे- असत्य कथन • -कटु वचन • -असभ्य वचन	• जैसे- मारने का विचार • -ईर्ष्या

घातिया कर्म
तो पापरूप
ही है
पुण्यास्रव एवं
पापास्रव भेद
अघातिया कर्मों
की अपेक्षा से है

पुण्य बंध शुभ योग से ही होता है

शुभ योग से मात्र पुण्य का ही बंध होता है ऐसा नहीं ,बल्कि पाप का भी बंध होता है |

सकषायाकषाययोः साम्परायिकेर्यापथयोः।।४।।

❁कषाय सहित और कषायरहित आत्मा के योग का क्रम से साम्परायिक और ईर्यापथ कर्म के आस्रवरूप है ॥।४॥

आस्रव के रूप

साम्परायिक आस्रव

कषाय सहित

ईर्यापथ आस्रव

कषाय रहित

साम्पराय

- =कषाय; कषाय के साथ होने वाला आस्रव्,
- =संसार; जो कर्म संसार का प्रयोजक है

ईर्यापथ

- ईर्या = योग, पथ = द्वार
- जो कर्म मात्र योग से ही आते हैं

	साम्परायिक आस्रव	ईर्यापथ आस्रव
स्वामी	सकषायी(कषाय सहित)	अकषायी(कषाय रहित)
हेतु	मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय के साथ योग	सिर्फ योग
किसका कारण	संसार का कारण	स्थिति रहित आस्रव का कारण
कितने प्रकार का बंध होता है	प्रकृति, प्रदेश, स्थिति और अनुभाग बंध होता है	प्रकृति और प्रदेश बंध होता है
गुणस्थान	पहले से १० वें गुणस्थान तक	११ वें,१२ वें, १३ वें गुणस्थान में
जैसे-	(कषायरुपी) तेल युक्त दीवार पर (कर्मरुपी) रज चिपक जाती है	कोरी दीवार पर रज आकर चली जाती है

Presentation Created By- श्रीमति सारिका विकास छाबड़ा

इन्द्रिय-कषायाव्रत-क्रियाः पञ्चचतुः पञ्च-पञ्चविंशति-संख्याः पूर्वस्य भेदाः।।५।।

❁पूर्व के अर्थात् साम्परायिक आस्रव के इन्द्रिय, कषाय, अव्रत और क्रिया रूप भेद हैं जो क्रम से ५, ४, ५, और २५ हैं॥५॥

इन्द्रिय	• आत्मा के लिंग को इन्द्रिय कहते हैं
कषाय	• जो आत्मा को कसे अर्थात् दुःख दे
अव्रत	• चारित्र मोहनीय कर्म के उदय से व्रत धारण नहीं करना
क्रिया	• 25 क्रियायें

साम्परायिक आस्रव -३९ भेद

इन्द्रिय	कषाय	अव्रत	क्रिया
५	४	५	२५
५ इन्द्रियों के विषय में प्रवृत्ति का भाव	जो आत्मा को कसे अर्थात् दुख दे	दुख का कारण बुरा कार्य	भिन्न भिन्न भावों सहित प्रवृत्ति

इन्द्रिय

स्पर्शन

रसना

घ्राण

चक्षु

कर्ण

कषाय

क्रोध

मान

माया

लोभ

अव्रत

- हिंसा
- चोरी
- परिग्रह
- झूठ
- कुशील

Presentation Created By- श्रीमति सारिका विकास छाबड़ा

क्रिया

५ विभिन्न क्रिया

५ हिंसा भाव की मुख्यतारूप

५ इन्द्रियों के भोग बढ़ाने संबंधी

५ धर्माचरण में दोष कारक

५ धर्मधारण से विमुख करने वाली

Presentation Created By- श्रीमति सारिका विकास छाबड़ा

५ विभिन्न क्रिया

- सम्यक्त्व
- मिथ्यात्व
- प्रयोग
- समादान
- ईर्यापथ

सम्यक्त्व	• चैत्य, गुरु, शास्त्र की पूजा स्तवन आदि सम्यक्त्व को बढ़ाने वाली क्रियाएं
मिथ्यात्व	• कुदेव आदि के स्तवन आदिरूप मिथ्यात्व को बढ़ाने वाली क्रियाएं
प्रयोग	• शरीरी आदि के द्वारा गमन आगमन आदि प्रवृत्ति रूप क्रियाएं
समादान	• संयम धारण करने पर भी अविरति की ओर झुकना
ईर्यापथ	• ईर्याआस्त्रव के कारणभूत जो परिस्पन्दनात्मक क्रिया है

५ हिंसा भाव की मुख्यतारूप

प्रदोषिकी	• क्रोध के आवेश से हृदय में दुष्टता रूप परिणाम होना
कायिकी	• दुष्ट भाव युक्त होकर उद्यम करना
अधिकरणिकी	• हिंसा के उपकरण जिनसे विकार उत्पन्न होते हैं उनको ग्रहण करना
परितापकी	• दूसरों को दुःख उत्पन्न करने वाली क्रिया
प्राणातिपातिकी	• स्व-पर के आयु, इन्द्रिय,बल और श्वासोच्छ्वास प्राणों का वियोग करना

५ इन्द्रियों के भोग बढ़ाने संबंधी

दर्शन

- राग के वशीभूत प्रमादी जीव का रमणीय पदार्थों के सुन्दर रूपों में अवलोकन करने का अभिप्राय होना

स्पर्शन

- छूने योग्य पदार्थ के स्पर्श करने में रागी जीव की जो छुते रहने की बुद्धि होना

प्रात्ययिकी

- प्राणियों का घात करने के लिये नये-नये उपकरणों को उत्पन्न करना

समन्तानुपात

- स्त्री पुरुष और पशुओं के उठने बैठने के स्थान पर मलोत्सर्ग करना

अनाभोग

- प्रमार्जन और अवलोकन नहीं की गई भूमि पर शरीरादि का रखना

५ धर्माचरण में दोष कारक

स्वहस्त	• जो क्रिया दूसरों द्वारा करने की हो उसे स्वयं कर लेना
निसर्ग	• पाप में दूसरों की प्रवृत्ति कराने के लिये सम्मति देना
विदारण	• दूसरे ने जो सावद्य किया हो उसे प्रकाशित करना

आज्ञाव्यपादिकी

- चारित्र मोहनीय के उदय से आवश्यक आदि के विषय में शास्त्रोक्त आज्ञा को न पाल सकने के कारण अन्यथा निरूपण करना

अनाकांक्षा

- धूर्तता और आलस्य के कारण शास्त्र में उपदेशी गई विधि का अनादर

५ धर्मधारण से विमुख करने वाली

आरम्भ	• छेदना,भेदना आदि क्रिया में स्वयं तत्पर रहना और दूसरे के करने पर हर्षित होना
पारिग्रहिकी	• परिग्रह के नष्ट न होने देने के लिये हो प्रयत्न करना
माया	• ज्ञान दर्शन आदि के विषय में छल करना
मिथ्यादर्शन	• मिथ्यादर्शन के साधनों से युक्त पुरुष की प्रशंसा करना की 'तु ठीक करता है'
अप्रत्याख्यान	• संयम का घात करने वाले कर्म के उदय से त्याग रूप परिणामों का न होना

कारण	कार्य
परिग्रह रूप अव्रत	पारिग्रहिकी
क्रोध	प्रदोष
मान	अनम्रता, प्रात्ययिकी
माया	माया क्रिया
प्राणातिपात (हिंसा)	प्राणातिपातिकी, आरंभ
असत्य, चोरी, कुशील	आज्ञा-व्यापादिका
कुशील	दर्शन, स्पर्शन
अव्रत	अप्रत्याख्यान

योग तो सभी आत्माओं के समान होता है तो उनका आस्रव भी समान होगा?

कारण के भेद से कार्य (आस्त्रव) में भेद होता है

Designed by Pngtree

तीव्र-मन्द-ज्ञाता-ज्ञातभावाधिकरण-वीर्य-विशेषेभ्यस्तद्विशेषः।।६।।

- तीव्रभाव, मन्दभाव, ज्ञातभाव, अज्ञातभाव अधिकरण और वीर्य के विशेष से उसकी(आस्रव की) विशेषता होती है |

आस्रव में हीनता-अधिकता के कारण

तीव्रभाव	• तीव्र कषायरूप भाव
मंदभाव	• मंद कषायरूप भाव
ज्ञातभाव	• बुद्धिपूर्वक जानकर
अज्ञातभाव	• प्रमाद अज्ञान सहित
अधिकरण	• आधार
वीर्य	• स्वबल

वीर्य आत्मा का ही परिणाम होने पर अलग से क्यों लिया?

शक्ति विशेष से हिंसादी में विशेषता आती है यह बताने के लिये वीर्य को अलग से लिया

- Reference : तत्त्वार्थसूत्रजी , सर्वार्थसिद्धिजी, तत्त्वार्थमञ्जूषाजी
- Presentation created by : Smt. Sarika Vikas Chhabra
- For updates / comments / feedback / suggestions, please contact

  - sarikam.j@gmail.com
  - ☎: 0731-2410880